[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3502

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

# संगीत में नवाचार – एक अपेक्षा

**डॉ. मीनाक्षी जोशी**
प्राध्यापक, संस्कृत
शा. महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महा., इन्दौर

आधुनिक युग में सर्वाधिक विकास का अथवा प्रगतिशीलता का द्योतक शब्द है 'नवाचार' जिसे अंग्रेजी भाषा में कहते हैं Innovation अर्थात् कुछ ऐसा नयापन जो विकास अथवा प्रगति/उन्नति में सहायक हो जावे। ये नयापन तकनीकी से अधिक जुड़ा हुआ होता है। आज सारा विश्व इस नवाचार के लिये संकल्पित व कटिबद्ध सा दीखता है। शिक्षा के क्षेत्र में, अध्ययन–अध्यापन के क्षेत्र में निरंतर किये जा रहे सायास प्रयासों में नवाचारों को विशेष स्थान दिया जा रहा है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन–अध्यापन की आधुनिक शैलियों के प्रयोग हेतु विशेष तकनीकी व्यवस्थाओं के लिये नवाचारों की महती आवश्यकता अनुभूत की जा रही है। परिणामतः प्रत्येक विषय के लिये नवाचारों का अन्वेषण, अविष्कार एक अनिवार्य आवश्यकता बन गई है।

संगीत एक पारंपरिक पद्धति से अध्ययन–अध्यापन किया जाने वाला विषय है। गुरू–शिष्य, घराने, गंडाबद्ध शिष्यत्व जैसी परंपराओं में आबद्ध शिक्षण अब एक नूतन नवाचार के साथ अध्ययन–अध्यापन हेतु प्रस्तुत किये जाने को तैयार है। गायन, वादन और नृत्य की त्रिवेणी से युक्त यह संगीत–सरिता जिसमें मानवीय भावनाओं, संवेदनाओं, अनुभूतियों व भंगिमाओं की रसापूरित प्रस्तुतियां दी जाती हैं, यंत्रों की नीरसता से सरस बनाने का एक महनीय किन्तु दुष्कर सा प्रयास प्रतीत होता है। गायन, वादन और नर्तन इन तीनों कलाओं की प्रस्तुति हेतु मात्र कलाकार की ही आवश्यकता नहीं होती वरन् एक ऐसा गुणी, दक्ष, कुशल संगतकार भी परमावश्यक होता है जो गायक, वादक अथवा नर्तक की प्रस्तुति सुर, ताल और लय में समायोजित कर प्रस्तुति को न केवल आकर्षक बनाता है वरन् उसे पूर्णता भी प्रदान करता है।

ऋक्, यजु, साम में संगीत सामस्वरूप है। वेदत्रयी का एक प्रधान अंग है साम। सृष्टि के कण–कण में जैसे ईश तत्व विराजता है वैसे ही प्रकृति के प्रत्येक तत्व में साम समाया है। प्रकृति संगीतमयी है, प्रकृति में लय है, प्रकृति नर्तकी है, संसार की संसरणशीलता में एक तालमयी गति है। अतः एक ऐसी दृष्टि की आवश्यकता है जो सृष्टि के इस संगीत को देख सके, सुन सके और उसका अनिर्वचनीय आनंद प्राप्त कर सके।

जगत् के आरंभ का नाद, ब्रह्मा की रचित–सृजित सृष्टि के उद्गम का उद्घोष, विश्व की वैश्विकता की सिद्धि का मूल मंत्र ऊँ की अनुगूंज है, संगीत का प्रथम स्वर है ऊँ, ब्रह्मा, विष्णु, महेश की त्रिगुणत्मिका सृष्टि का निनाद है ऊँ, इस महद् नाद से न केवल व्यष्टि वरन् संपूर्ण समष्टि भी गुंजायमान रहती है।

संगीत अमूर्त है उसका साक्षात् मूर्त रूप श्वेतवसना, सितपद्मविराजिता, विद्यागुणदायिनी, वीणापुस्तकधारिणी मां सरस्वती है। जितनी पवित्रता, सौम्यता, शालीनता, बोधगम्यता, सरसता, तरलता, संगीतमयता मां वीणापाणि के इस अद्भुत अलौकिक रूप में है वही संगीत में प्रत्यक्ष दृश्यमान है।

संगीत तपः निसृत है, सतत् साधना पश्चात् प्राप्त होने वाला पुण्य फल है। संगीत निदान है, समाधान है, परमपिता परमात्मा से मिलन का उपादान है, भावाभिव्यक्ति का श्रेष्ठतम अवदान है।

यह पारलौकिक प्रतिभा प्रभु प्रदत्त होती है। जिन्हें भी यह प्राप्त है समझिये परमात्मा ने उसे स्वयं तक पहुंचने का सूत्र प्रदान कर दिया है। प्रकृति से जुड़ाव का माध्यम है संगीत। आत्माभिव्यक्ति का परम चरम है संगीत। आत्मा का धर्म है संगीत।

वैदिक ऋचाओं में, स्तुति मंत्रों में, सूफी संतों के भजनों में,, दोहों–पदावलियों में, महाकवियों के छंदों में, गीतकारों के गीतों में जो लयबद्धता, रागमयता व सुरगम्यता है बस वही संगीत है।

यह संगीत जब भावप्रवणता के साथ पूर्ण साधना उपरांत प्रस्तुत किया जाता है तो सांसारिक कष्ट–क्लेशों के वात्याचक्र में उलझे मृतप्राय व्यक्ति को भी अनुप्राणित कर जाता है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

संगीत के इस दिव्य, परमात्म, पारलौकिक स्वरूप को समझाना ही नवाचार का लक्ष्य होना चाहिए। यह युग तात्कालिक और कष्टविहीन सुखों को यथाशीघ्र प्राप्त कर लेने में ही अपनी सफलता मान रहा है। तपःसाध्य और कष्ट प्राप्त विद्याएं उनके आकर्षण का विषय नहीं है। विद्यार्थियों, शोधार्थियों, रसिकों व सहृदय संगीत प्रेमियों की यही धारणा रही है कि सस्ता, सुगम व सरल संगीत ही उनके मनों को मोह सकेगा।

सम्प्रति, कम्प्यूटर जैसे यंत्रों ने प्रत्येक मानवीय व मानवेतर प्रतिभाओं पर अपना यांत्रिक अतिक्रमण कर लिया है, संगीत भी इससे अछूता नहीं है। आज हारमोनियम, सितार, वीणा, सारंगी, संतूर, सरोद, तबला, बांसुरी, पखावज, मृदंग, चिमटा, खड़ताल, मंजीरे, घुंघरू जैसे वाद्यों को एक साथ मात्र एक की–बोर्ड पर प्राप्त किया जा सकता है। बटन दबाते ही वांछित यंत्र, यंत्रचलित हो, मनवांछित गति व लय में प्राप्त हो जाते हैं जो व्यक्ति आधारित परवशता को लगभग समाप्त सा कर देते हैं। संगीत शिक्षण की अनिवार्य व पारम्परिक, गुरू–शिष्य, घराने व गंडाबद्ध शिष्यत्व की शैलियाँ वर्तमान में लुप्तप्राय सी हो रही है। कम्प्यूटराईज्ड संगीत, गुरू व संगतकार दोनों की आवश्यकता पर प्रश्नचिन्ह सा लगा रहा है। आज ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा भी अपना अर्थ खो रही है क्योंकि ये आधुनिक यंत्र प्रतिभाहीन में भी संगीत की योग्यता कुछ सीमा तक प्रदान करने में अपना सफल सहयोग दे रहे हैं।

भारतीय संगीत शैली पर पाश्चात्य संगीत शैली का प्रभाव कुछ ऐसा छा गया है जिससे उबर पाना कठिन ही नहीं दुष्कर सा प्रतित होता है। संगीत की राग–रागिनियाँ अब अपने स्वरों के आरोह–अवरोह से न जानी जाकर नोटेशन से जानी जाती हैं। महद् आश्चर्य का विषय है कि भारतीय संगीत का अलौकिक जादू, पाश्चात्य को रिझा रहा है। भारतवर्ष के स्वनामधन्य संगीत विशेषज्ञ अपनी दक्षता का प्रमाण विदेशियों के संगीत शिक्षण में दे रहे हैं।

नया सदैव त्याज्य हो, ऐसा नहीं है, नवीनता सदैव स्वागतयोग्य होती है, नूतनता में युगानुरूप अनुकूलता विद्यमान होती है। अतः संगीत शिक्षण में नवाचारों का प्रयोग कुछ इस प्रकार से किया जावे कि संगीत की देह से उसकी आत्मा विलग न हो पावे। संगीत शिक्षण में नवाचारों का ऐसा प्रयोग हो जो पुरातनता को परिमार्जित कर नूतन आकार दे सके। शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों संगीत के मर्म को समझ सकें। नवसाधन प्रयोग श्रोता व दर्शक के अंतस् को भिगोने की क्षमता रख सकें। यंत्र भावों पर हावी न हो पावे, यांत्रिक संगीत भावनाओं, संवेदनाओं व अनुभूतियों के सरसतम पक्ष पर आघात न कर सके। नवाचार की प्रथम व आत्यंतिक आवश्यकता है मौलिक प्रतिभा के प्रदर्शन को स्थान दिया जाना। संगीत में प्रयोग किये जाने वाले नवाचारों में मौलिक प्रतिभा का हनन न हो वरन् मौलिक प्रतिभा अपनी पूर्णता के साथ दर्शायी जा सके तभी नवाचारों के प्रयोग की सार्थकता सफल सिद्ध होगी। कवि कहता है – 'परिवर्तन ही यदि उन्नति है तो हम बढ़ते जाते हैं', निश्चित ही ये नवाचार परिवर्तन द्वारा उन्नति के वे सिद्ध प्रतिमान हैं जिनसे वर्तमान युग के नवयुवक युवतियां अपनी मौलिक प्रतिभा का दिग्दर्शन करा सकेंगे तथा विश्व को अपनी अद्वितीय अनुपम कला से चमत्कृत कर पाने की सामर्थ्य प्राप्त कर सकेंगे।